वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

नवम्बर 2019

पाप के रूप

आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखाती है

परलोक सत्य है

पढ़े लिखे लोगों में धार्मिक चोंचले

नये घर में सभा

एक साधन

शुभ उदघाटन

मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में भगवान देवात्मा का भाव प्रकाश

मनुष्य मात्र! मेरे उपकार कर्ता तुम धन्य हो!! मनुष्य जगत् में जिस-जिस से मैंने जो-जो कल्याण लाभ किया है, वह किसी विषय में हो, मेरी इस समय एक मात्र इच्छा है, कि वह सब धन्य हों। प्रत्येक ऐसा आत्मा जिसने मेरा कुछ भी भला किया है, जिसने कभी खड़े होकर मेरी तरफ करुणा की दृष्टि से, मेहरबानी की निगाह से देखा है, जिसने झुककर कभी जमीन पर पड़ी हुई कोई चीज़ ही उठाकर मुझे दी है, वह भी धन्य है। मैं उसके लिए मंगल कामना करता हूं। मैं चाहता हूं, कि ऐसे घटिया से घटिया उपकार कर्ता का भी कल्याण हो। उस तक भी मेरा मंगल भाव पहुंच सके। मेरे शरीर के पालन में, रक्षा में, सेवा में शुभ भावों के द्वारा परिचालित होकर जिन्होंने कुछ भी भाग लिया हो, उन सब का कल्याण हो, उनका मंगल हो। मेरे जीवन के पथ में किसी चीज़ से सहाय होने में जिन्होंने भाग लिया है, जिनको मैं चाहे न भी जानता हूं, उन सबका भला हो। जिनकी पुस्तकें मैंने आज तक पाठ की हैं, ऐसे सब पुस्तक रचयिता जिनके लेखों से मैंने कुछ भी लाभ उठाया है वह सब धन्य हैं। जितना मैं शुभ को पहचान सकूं, उतना ही जो मेरे शुभ कर्ता हैं, वह मुझे अच्छे दिखाई देंगे। जिन्होंने मेरा शुभ किया है, उनके कल्याण के लिए यदि मैं अपनी अपनत्व को कुछ भी खो न सकूं, अपनी स्वार्थ परता को कुछ भी भेंट न कर सकूं, तो मेरी उच्च गति कहां है? अपने उपकारी के लिए यदि कल्याण की इच्छा नहीं तो मैं औरों का कहां कल्याण कर सकता हूं। ऐसी सूरत में मेरे जीवन का विकास कहां? मेरी अपनी उच्च गति कहां? केवल कल्याण चाहकर भी मैं बच नहीं सकता, कितना किसके लिए मैंने कल्याण करना है, कितना किसके लिए मैंने परिशोध करना है, जब तक वह सब कुछ न हो जावे, मेरा उनके साथ मेल कहां? ऐसे एक कर्म से, मेरी एक चितवन से भी यदि किसी को अनुचित क्लेश वा हानि पहुंची है, तो जब तक वह हानि वर्तमान है, उसका जब तक परिशोध न हो, और जिनसे मैंने कल्याण लाभ किया है, उनके लिए पूरी प्रीति न हो, तब तक मुझ में उच्च जीवन क्योंकर पैदा हो सकता है, और बढ़ सकता है? इसलिए मेरे जीवन के पथ में जिन्होंने कुछ भी सहायता की हो, उनकी वह सुन्दर छवि मेरे सम्मुख आवे, और मेरा कल्याण हो। जिससे कुछ भी मेरे भीतर शुभ आया हो, उसके लिए मेरे भीतर कृतज्ञता का भाव आवे। मेरे जन्म देने में, पालन करने में, जीवन के पथ में जिस-जिस ने सहायता की हो, वह सब मेरे सम्मुख आवें। जिन्होंने कल्याण जानकर कल्याण किया हो, ज्योति रखकर ज्योति दी हो, उनकी वैसी ही शुभकर और सुन्दर छवि मेरे सम्मुख आवे। उनके रूप की अधिक से अधिक झलक मेरे सामने आवे। मैं अधिक से अधिक उनका शुभाकांक्षी हो सकूं। जिन्होंने मेरा कल्याण किया हो, मैं उनका कृतज्ञ हो सकूं। वह चाहे सब इस लोक में हों, चाहे परलोक में हों, मैं उनके प्यार की चीज़ बन सकूं। उनके निकट हो सकूं। ऐसा हो, कि मनुष्य जगत के सम्बन्ध में मेरा सम्बन्ध और हितकर हो जावे, और भी सुन्दर बन सके, यही मेरा कामना है पूर्ण हो।

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 11
नवम्बर 2019
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

पाप के रुप

अपनी धर्म समाज में आठ पापों को सदा के लिए छोड़ने की पहली श्रेणी की ठोस प्रतिज्ञा है। इसलिए आप साथी सेवकों के सामने पाप की यही तस्वीर बनती है कि नशे न करने, मांस अण्डे न खाने, चोरी न करनी, रिश्वत न लेनी, बदचलनी न करनी और विशेष बेबसी के बिना जीव-हत्या न करनी आदि-आदि। इसके भिन्न पाप की कुछ और तस्वीर होती है या पाप के कुछ और रुप भी होते हैं, इस बात का आम सेवकों को कुछ पता नहीं होता।

पाप क्या होता है? पहले यह बात जानने की आावश्यकता है। पाप को मोटे तौर पर समझाने के लिए यह कहा जाता है कि हमारी हर वह क्रिया या हरकत या गति जो किसी भी अस्तित्व को पहले से बिगाड़ दे, खराब कर दे, कमज़ोर कर दे, उसे पाप कहते हैं। किसी को पहले से बिगाड़ना दो प्रकार से होता है, किसी अस्तित्व के बाहरी रुप, शक्ल या आकार को बिगाड़ना, और दूसरा उसके भीतर के रुप अर्थात उसको स्वभाव, उसकी फितरत या नेचर को बिगाड़ना।

थोड़ा बारीकी से सोचें तो वास्तव में प्रत्येक वह चिन्ता वा क्रिया जो हमारे आत्मा या रुह की हानि करती हैं, पाप है। पाप सदा हमारी रुह की हानि करने की हरकत होती है, इसीलिए पाप हमेशा रुह Oriented या रुह केन्द्रित या रुह से सम्बन्ध रखता है।

उपरोक्त मोटे पाप इसीलिए पाप हैं और बुरे समझे जाने के योग्य हैं, क्योंकि वह हमारे शरीर की हानि तो करते ही हैं, परन्तु उसके साथ-साथ हमारी रुह की भी हानि करते हैं और सामाजिक हानि भी करते हैं, हमारे अस्तित्व को हानि पंहुचाने की गति को पाप कहते हैं और वह पाप होता है।

उपरोक्त सारे आठ पाप शरीर द्वारा ही होते हैं अर्थात वह मोटी शारीरिक क्रियाएं होती हैं। अब प्रश्न यह है कि पाप का केवल उपरोक्त शारीरिक क्रियायों का ही रूप होता है या उसके कुछ रूप और भी होते हैं? हां, पाप के उपरोक्त स्थूल रूपों को छोड़कर कुछ सूक्ष्म रूप भी होते हैं। उनके बारे में आगे विचार करते हैं।

पाप के सूक्ष्म रुप कई प्रकार के हैं। वह हैं विश्वास, वचन, चिन्ता, संकेत और दृष्टि आदि

विश्वासः – प्रत्येक मनुष्य कई प्रकार के विश्वास वा अकीदे रखता है। जो विश्वास सत्य वा शुभ मूलक न हों वा मिथ्या वा झूठ मूलक हों, पाप वा बुराई मूलक हों, उनसे हमेशा हानि होती है। मनुष्य के हित

वा भले का मार्ग नहीं खुलता। मिथ्या और पाप मूलक विश्वास मनुष्य के आत्मिक विकास के मार्ग में पहाड़ बनकर खड़े रहते हैं। उसके सच्चे शुभ और हित का मार्ग खुलने नहीं देते। मिथ्या विश्वास आत्मिक हानि करते हैं। जैसे मुस्लिम भाईयों का यह विश्वास कि खुदा ने पशु, पंछी, जीव और चौपाए मनुष्य के खाने के लिए बनाए हैं, यह विश्वास उन्हें कभी शाकाहारी बनने नहीं देगा। उन्हें पशुओं और गाए आदि को काट खाने में पुण्य ही दिखाई देता है, तो उनका हित कैसे होगा? इन्सान के लिए एक समय में चार शादीयां जायज़ हैं, यह विश्वास पाप मूलक है, हानिकारक है। सती होकर स्वर्ग मिलता है, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, स्त्रियों के उचित अधिकारों के विरुद्ध जितने भी विश्वास हैं, वह भयानक वा हानिकारक हैं। पशुओं, पक्षियों, मासूमों के अधिकारों के विरुद्ध जो भी विश्वास हैं, वह हानिकारक हैं और पाप मूलक हैं। मेरा ही धर्म ठीक है, मेरा ही गुरु ठीक है, मेरा ही धर्म ग्रन्थ ठीक है, इनकी छानबीन की या उचित वैज्ञानिक पड़ताल की कोई आवश्यकता नहीं, यह विश्वास झूठा, भयानक और पाप मूलक है। महा हानि कारक है। शराबी का, मांसाहारी का, व्यभिचारी का सुधार होना अभी सम्भव हो सकता है, अधिकतर मिथ्या विश्वासियों का भला होना असम्भव के लगभग है। जहां कोई तर्क वा दलील काम नहीं करती, वह मिथ्या विश्वास है। अन्ध विश्वास है। अन्ध विश्वासी होना सबसे बड़े मन्द भाग हैं और अत्यन्त भारी भूल है। अपने सच्चे भले या हित के इच्छुक मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह अपने दिल दिमाग को खुला रखे, तर्क, दलील, वैज्ञानिक कसौटी को अपने विश्वासों की जाँच पड़ताल और निरीक्षण करने के योग्य होना चाहिए। इस कसौटी को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहिए। हमारे सत्य विश्वासों वा मिथ्या विश्वासों में बाल बराबर ही अन्तर होता है। इसलिए इनकी परख़ की सदा बारीक सूक्ष्म सोच वा सूझ के द्वारा ज़रूरत है।

वचनः – हमारे वचनों द्वारा भी हम पाप करते हैं, अपने वचनों, अपनी बोली, वाणी हमेशा ठीक होने का हमें एहसास होता है। उसमें कोई दोष वा नुक्स नज़र नहीं आता। हमारे वचन भी पाप वा झूठ मूलक होने के कारण हानि पैदा करने का कारण बनते हैं। प्रत्येक झूठे वाक्य के साथ आत्मिक हानि का होना नेचर का अटल नियम है। आत्मा के भीतर अन्धेरा वा कठोरता का बढ़ना आवश्यक है। झूठे बोल और वचन फसादों, बुराईयों और पापों की जड़ बन जाते हैं। महाभारत का कारण केवल अपने ही देवर को बोले हुए द्रोपदी के रूखे, कटु, तीखे वा चुभने वाले कुछ अपमान जनक बोल थे। महान शैक्सपीयर के उपन्यास की देवी जैसी नायिका के चरित्र के विषय में शैतान आईगो के शत प्रतिशत झूठे ब्यान ने उसके पति ऊथैलो से ही उसका कत्ल करवा दिया। वचन आग लगाने का काम भी करते हैं और दूसरे का मन मोह लेने का काम भी करते हैं। बोली वा वचन द्वारा शैतान लोग बड़े बड़े झगड़े खड़े कर देते हैं। बाप-बेटे को, मां-बेटी को, भाई भाई को, पति पत्नी को एक दूसरे से फाड़ने का काम करते हैं। एक दूसरे के शत्रु बना देते हैं। कैकई माता से मन्थरा के बार बार सलाह देने ने ही राम जैसे पुरुष को 14 वर्ष का बनवास दिला दिया। निन्दा करना आग लगाना ही है। निन्दक और फिर झूठा निन्दक सबसे बड़े पापियों में शामिल होता है। निन्दक व्यक्ति अपना स्वार्थ तो सिद्ध कर सकता है, परन्तु अपने शैतानी रुप को चीते की धारियों की

तरह कभी तज नहीं सकता। उसके कभी महान या उच्च बनने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। निन्दा चुगली केवल शब्द ही नहीं होते वह निर्दोष पर गोली दागने के समान ही होते हैं। ऊंचे बोल, रूखे बोल, खीझ कर बोले हुए बोल, अशिष्ट और फीके बोल, अश्लील बोल, नीच बोल, पाप के सिवा और कुछ नहीं होते। बहुत धीमें, मीठे, शान्ति भरे सुखी करने वाले बोल, उच्च जीवन के बिना सम्भव नहीं होते।

चिन्ताः – ख्याल वा सोच के साथ भी पाप हो जाता है। शैक्सपीयर ने कहा है, केवल हमारा ख्याल हमें अच्छा व बुरा बनाता है, हमारी सोच के बिना कुछ भी अच्छा वा बुरा नहीं होता। ईसा मसीह ने कहा है कि बदचलनी का ख्याल आने से ही मनुष्य किसी अंश तक बदचलन बन जाता है। गुण चिन्तन महान बना देता है। अवगुण चिन्तन शैतान बनाकर कुछ भी बाकी नहीं छोड़ता। चिन्ता में ही उपकार स्मरण करने से इस पृथ्वी पर स्वर्ग आ जाता है। नाशुकरेपन की चिन्ताओं से ही नर्क उपजता है। सोच वा चिन्ता को चिता समान बताया गया है। नाकामियों वा अधूरी इच्छाओं के बार-बार सोचने से डिपरैशन, low blood pressure और Heart फेल हो जाते हैं। अपनी सफलताओं, जीत और उपलब्धियों के विषय में बार-बार सोचने से मनुष्य Depression से निकलता है और उत्साह में आता है। एक व्यापारी के अनाज के कमरे भरे हुए थे। उसने आकाश पर कुछ बादल देखे और ख्याल-ख्याल में शेखचिल्ली की तरह सोचने लगा कि अच्छी बारिश होने से अगली फसल भी अच्छी होगी और अनाज सस्ता हो जाएगा, मुझे घाटा पड़ जाएगा। घाटे के ख्याल आते ही उसका Heart फेल हो गया और वह मर गया।

क्रियाः – शरीर के सम्बन्ध में प्रत्येक हानिकारक क्रिया पाप होती है। यह रूप तो पाप का सब को दिखाई दे जाता है, इसलिए उसे समझाने की आवश्यकता नहीं। संकेत वा ईशारा भी पाप करवा देता है। पन्ना धाय ने झूठा ईशारा करके ही अपना पुत्र कत्ल करवा दिया था। ईशारों से फसाद खड़े हो जाते है। झूठ और पाप भरा ईशारा सदा पाप होता है।

दृष्टिः – दृष्टि द्वारा भी पाप हो जाता है। एक बार हम बहुत सारे जन एक धार्मिक आश्रम में गए। वहां एक सुन्दर स्त्री की मूर्ति लगी हुई थी, हमारे में से एक नौजवान ने आश्रम वासी से पूछा कि यहां यह एक नंगी मूर्ति क्यों लगी हुई है। वहां रहते हुए एक भिक्षु ने कहा कि दोष मूर्ति में नहीं दृष्टि में है। दूसरों की पाक, मासूम और नेक बेटियों, बहनों की तरफ अपवित्र वा नापाक दृष्टि के साथ देख देखकर हम शैतान का रूप धारण कर लेते हैं। करुणा, स्नेह और श्रद्धा भरी दृष्टि हमें फरिश्ता बनने के राह पर डाल देती है। घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और क्रोध भरी दृष्टि पाप का स्त्रोत होती है। बन्द आंखों से मूक रहना, मनुष्य को पाप से मुक्त रहने में सहायता देता है। देखकर अनदेखा कर सकता है।

हमारा लक्ष्य है अपने अस्तित्व की, अपने शरीर और रुह की हानि से अधिक से अधिक बचना, अर्थात पाप से अधिक से अधिक बचने का यत्न करना। पाप मोटे, भयानक और स्थूल होते हैं, परन्तु उनका सूक्ष्म और अति सूक्ष्म रूप भी होता है। सूक्ष्म से सूक्ष्म पापों को देखना अपनी सूक्ष्म नीच गतियों को समझना और उनसे मुक्त होना हमारा सबका पाक अधिकार है। काश! हम सब अपनी योग्यता के अनुसार अधिक से अधिक अपनी सूक्ष्म से सूक्ष्म नीच गतियों को उनके प्रकृत रूप में देख सकें और गुरू कृपा द्वारा उनकी शक्ति पाकर उनसे मुक्त हो सकें।

(बलदेव सिंह)

आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखाती है

(पी० वी० कनल)

पिछले अंक में उपरोक्त शीर्षक से जो लेख दिया था जिसमें लेखक ने निम्नलिखित विषयों पर लिखा था :-

1. जीवन पथ कुछ और है, विद्या बुद्धि और
2. आपकी ज्योति हमें होश की अवस्था में रखती है।
3. देव ज्योति में ही हमें अपनी उल्टी दृष्टि का बोध होता है।
4. माता के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि
5. अध्यापकों के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि
6. आत्मिक उपकारियों के सम्बन्ध में दुष्चिन्ताएं
7. अपने दोषों को मानने के सम्बन्ध में उल्टे विश्वास

अब इससे आगे पढ़िए, अच्छा हो यदि पिछले अंक का पाठ भी पहले करके सारा लेख पढ़ें, बहुत लाभ होगा।

५. झूठा दिखावा

मेरे प्रान्त के बहुत से विद्यार्थी जब कभी अपने प्रान्त से बाहर जाते, तो अमीरों की न्याईं ठाठ बाठ से पहनते, खाना खाते और रहते सहते, चाहे उस फिजूलखर्ची के कारण मां बाप को दुखी दिन और बेचैन रातें काटनी पड़ती। हमारे रहन सहन को देख कर वहां के विद्यार्थियों पर यह प्रभाव पड़ता कि यह राजकुमार हैं। हम अपने आपको बहुत बड़ा प्रगट करते। हमारे प्रान्त के एक भद्र पुरूष, जो प्रान्त के मुख्य नगर में रहते थे, हमारी ऐसी दशा को देख कर बड़े दुखी और निराश हुए और उन्होंने हमारा असली रूप दिखाते हुए एक पत्र अंग्रेजी दैनिक अखबार को लिखा। झूठी और बनावटी पोज़ीशन बनाए रखने की हानियों से बचाने की उनकी कोशिश का धन्यवाद करने के स्थान पर मैंने और दूसरे विद्यार्थियों ने उन्हें बुरा भला कहा और उन पर झूठे इलज़ाम लगाए।

आपकी ज्योति ने इस सम्बन्ध में मेरे दृष्टिकोण को बहुत बदल दिया है। और आपकी शक्ति से मैं किसी सीमा तक दूसरों के सामने अपने आपको झूठ मूठ बढ़िया दिखाने की आदत को छोड़ने के योग्य हो गया हूं।

एक दिन मैं जिला मैजिस्ट्रेट - जो देव समाज के सम्पर्क से प्राप्त उच्च चरित्र के कारण मेरा बड़ा मान करते थे - के सामने गया। उन्होंने मुझे कहा कि तुम्हारी आय प्रति मास कम से कम एक हज़ार रुपए तो होगी। (पुराने जमाने की बात है) यह बात ठीक न थी। मैं आपके विकासकारी प्रभावों के अधीन आ चुका था, इसलिए मैं वहीं और उसी समय बताए बिना न रह सका कि ऐसा नहीं है। परन्तु जब मैंने अपनी आत्म परीक्षा की तो मैंने देखा कि उसका ऊंचा अनुमान चाहे गलत था, परन्तु मुझे ऐसा सुनना सुखदायक लगा और उसे ग़लत बताने के लिए मुझे ज़ोर लगाना पड़ा।

मेरे सामने एक भारी सचाई प्रगट हुई। यह बात बिल्कुल झूठी थी, इसने मुझे खुश किया, क्योंकि उससे मेरे प्रशंसा अनुराग की तृप्ति हुई। और जब मैंने इसे ठीक किया जबकि मैं सचाई पर चल रहा था, तो भी मुझे इसके लिए दिल पर ज़ोर देना पड़ा। कैसी उल्टी दृष्टि!

६. जीवन के लक्ष्य के विषय में उल्टी दृष्टि

उल्टी दृष्टि की सबसे भयानक अवस्था जो मुझे आपकी रोशनी में दिखाई देती है, वह यह है कि मनुष्य गौण या साधन मात्र बनने वाली वस्तुओं को मुख्य वस्तु समझे और उन्हीं को अपने जीवन का लक्ष्य माने। आपकी ज्योति इस बात को स्पष्ट रूप से दिखाती है, कि धन तभी लाभदायक हो सकता है जब हम इसे भलाई और विकास में सहायक बना सकें।

अन्यथा यदि हम उसे ही अपना लक्ष्य समझकर उसके पीछे दौड़ेंगे, तो यह हमें अपना दास बना लेगा और हमारा पतन करेगा। मेरे सन्मुख अनेक मनुष्यों के - कुछ देव समाज के सभासदों के भी - दृष्टान्त हैं जो आपकी ज्योति से वंचित हैं और जो धन को केवल धन के लिए प्यार करते और कीमती समझते हैं। उन्हें इसकी प्राप्ति से वही सुख मिलता है, जो एक शराबी को शराब का एक के बाद दूसरा प्याला चढ़ाकर मिलता है। उन्माद की अवस्था उन्हें बहुत अच्छी लगती है, यद्यपि उनके पास पहले ही शेष सारे जीवन को इज़्जत से निर्वाह करने के लिए काफी धन है, परन्तु वह उसके नशे को तोड़ नहीं सकते। यदि वह धन दौलत की सनक छोड़ दें, और अपने आत्मा की भलाई का फिक्र करें, तो वह अपने और दूसरों के लिए बहुत हितकर प्रमाणित हो सकते हैं। परन्तु वह तब तक ऐसा नहीं कर सकते, जब तक आपकी ज्योति और शक्ति उनके भीतर प्रवेश करने का अवसर पाकर इस अंग में भी उनके भीतर शुभ परिवर्तन नहीं ला देती जैसा कि उनके जीवन के अन्य अंगों में उच्च परिवर्तन आया है।

वह आत्मा जो आपके देव प्रभावों के द्वारा इस धन के मोह से उद्धार पा चुके हैं, जानते हैं कि एक समय था जब वह इस भयानक उल्टी दृष्टि के शिकार थे।

एक बड़े खानदान का एक नौजवान ग्रेजूएट डाक्टर बनना चाहता था। जब उसे डाक्टर बनने का कारण पूछा गया, तो उसने कहा, "इसलिए कि लोग मेरी एक मूर्ति नगर के एक गेट के नज़दीक खड़ी करें।" उससे प्रश्न किया गया कि तुम्हारा बुत्त क्यों बनाएं?" उसने उत्तर दिया कि मैं लोगों की सेवा करूंगा और दान दूंगा।

यह उल्टी दृष्टि की एक विचित्र घटना है। वह लोगों में नाम पाने के लिए दूसरों की सेवा करना और धन कमाना चाहता था। जीवन के लक्ष्य के विषय में कैसी उल्टी दृष्टि!

परन्तु आपकी शक्ति ने उसे बदल दिया और उसने धन कमाने वाले सब काम छोड़ दिए और अब वह वर्षों से देव समाज में मिशनरी के रूप में काम कर रहा है।

इस अंग में मेरी अपनी उलटी दृष्टि भी बड़ी सीमा तक दूर हो गई है। मैंने भी हर अच्छे या बुरे ढंग से धन इकटठा करना अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था, ताकि मैं ऊंचे सामाजिक सम्बन्ध और संसारिक पदवी प्राप्त कर सकूं। जीवन के बारे में कैसा अन्धकार और कितना क्षुद्र लक्ष्य! आपने देव प्रभाव संचार करके मेरी दृष्टि बदलने और मुझे बचाने की कृपा की।

आप की महान ज्योति में मैं देखता हूं कि मुझे उल्टी दृष्टि से बचाने के लिए आपकी देव ज्योति और आपके देव तेज से बढ़कर कोई चीज़ कारगर नहीं। दूसरे शब्दों में मेरी दृष्टि ठीक रखने के लिए आपके देव प्रभावों से बढ़कर किसी चीज़ पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मुझे कड़वा तजरुबा है कि जब मैं अपने ऊपर निर्भर करता हूं तो मेरी दृष्टि उल्टी हो जाती है और मैं जीवन का उच्च मार्ग देखने के अयोग्य हो जाता हूं। उच्च जीवन के श्रेष्ठ मार्ग को देखने और उस पर चलने के बिना मैं सुरक्षित नहीं। मैं महसूस करता हूं कि जब मेरे हृदय पर आपका सबसे बढ़कर अधिकार होगा और केवल आपके देव रूप की ओर मेरा दिल आकृष्ट होगा, तब मेरी जीवन यात्रा सबसे बढ़कर सफल होगी।

काश! यह अति कंगाल और तुच्छ हृदय आपके अद्वितीय देव प्रभावों को ग्रहण करे और इस संसार के पतनकारी प्रभावों से अपनी रक्षा कर सके।

जीवन सम्बन्धों में है

मेरे भगवन्!

आपकी अद्वितीय ज्योति में मैं देखता और

अनुभव करता हूं कि इस दुखी देश को आपके आविर्भाव की नितान्त आवश्यकता थी। दुर्भाग्य से भारत ने ऐसे विचारक और फिलासफर उत्पन्न किए, जिन्होंने सम्बन्धों के जीवन को मुसीबत, दुख और कल्पित जन्म मरण का चक्कर बताया। इसीलिए उन्होंने सम्बन्धों के जीवन के लिए एक प्रकार की घृणा पैदा कर दी और किसी जंगल के कोने या पहाड़ की गुफा में तथाकथित योग और समाधि के द्वारा कल्पित ईश्वर की खोज पर बल दिया। इस भयानक फ़िलासफ़ी का तत्कालीन और सीधा नतीजा यह निकला कि रमते और निकम्मे साधुओं की एक भारी जमात उत्पन्न हो गई: जिनकी संख्या बढ़कर १ करोड़ से अधिक हो गई है। (अब तो कई गुणा बढ़ गई है।) उन्होंने सब कर्त्तव्यों और ज़िम्मेवारियों को तिलांजली दे दी है। वह केवल अपने सुख के लिए दूसरों की कमाई पर जीते हैं। इसका असर यहीं तक सीमित नहीं था, उसने बहुत से निकम्मे पुरोहित या पुजारी पैदा कर दिए, जो रक्तपाई कीड़ों की न्याई दूसरों का लहू चूसते हैं। जो घरबारी रहे, उन पर भी उस हानिकारक फ़िलासफ़ी का भंयकर प्रभाव पड़ा। उन्होंने घर के जीवन को त्याग देने के योग्य समझा और दूसरों की भलाई से सर्वथा उदासीन हो गए। इस प्रकार प्राय: सारे भारतवासियों की दृष्टि में सारे ही सम्बन्ध बोझ और बखेड़ा बन गए। जो लोग दुनियां में रहे और जिन्होंने सम्बन्ध बनाए, उन्होंने केवल अपनी नीच वासनाओं की तृप्ति और स्वार्थ की पूर्ति के लिए ऐसा किया। यह स्वार्थ धीरे-धीरे इतना बढ़ गया कि इसने भारत की एकता को छिन्न भिन्न कर दिया और इसे जातियों और उपजातियों के असंख्य टुकड़ों में बांट दिया। यह जातियां और उपजातियां एक दूसरे के साथ न विवाह का सम्बन्ध रखती हैं और न खानपान का...।

स्वार्थ ने एक एक साधारण भारतवासी के हृदय से दूसरों के प्रति सब उच्च भावों को नष्ट कर दिया, उसे विश्वगत सम्बन्धों से उदासीन करके निजी स्वार्थ की तंग कोठड़ी में धकेल दिया। नाना जगतों के सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेवारियों से उदासीन और अपने ही नीच स्वार्थ की तृप्ति भारतवासियों के लिए शाप प्रमाणित हुई। उसने सामाजिक जीवन और अपनी रक्षा के लिए दलबद्ध और संगठित होने की भावना समाप्त कर दी। इस खंडित और बिखरी दशा ने भारत को दूसरों की ओर ललचाई आंखों से ताकने वाले शून्य व्यक्तियों की धरती बना दिया।

अत: संग्रामशील जीवन जो दूसरों की भलाई में दिलचस्पी और उनके सम्बन्ध में उच्च कर्त्तव्यों के पालन से पैदा होता है, यहां पैदा नहीं हुआ। और वह उसी अवस्था में पड़े सड़ते रहे। पाश्विक प्रवृत्तियां और पाश्विक वृत्तियां इस धरती पर राज्य करने लगी, क्योंकि वह इतनी शक्तिशाली थी कि फिलासफर उन्हें समाप्त नहीं कर सकते थे।... इसलिए भारत का घोर पतन हुआ। देश के इस फालिज के असल कारण को कोई नहीं देखता। उसे जीवित करने के सब प्रयत्नों का निष्फल होना स्वाभाविक है, क्योंकि असल रोग का उन्हें ज्ञान नहीं। भारत नहीं जानता कि वेदान्त की महा भयानक फ़िलासफ़ी इसकी नस नस में प्रवेश कर गई है जिसने उसके भीतर कर्त्तव्य कर्मो के लिए अस्वभाविक घृणा उत्पन्न कर दी है। इस फ़िलासफ़ी के अधिकार को परे फैंकने की नितान्त आवश्यकता है। हमें अपने आत्मनाश का बोध कराने और उच्च भावों के अभाव को दिखाने के लिए सर्वश्रेष्ठ आत्मिक ज्योति की आवश्यकता है। नीच और स्वार्थपरायण जीवन के भयानक रूप तथा सात्विक शक्तियों के सुन्दर रूप को दिखाने के लिए देव ज्योति की आवश्यकता है। इस गलत फिलासफी के भयानक पंजे तथा नीच शक्तियों और नीच लक्ष्य से मुक्त होने के लिए हमें अध्यात्मिक बल या तेज की आवश्यकता है। उच्च अथवा सात्विक भाव विकसित करने के लिए भी

देव तेज की आवश्यकता है। हमारा समूचा आत्मिक जीवन नव निर्माण चाहता है।

भगवन्! ऐसा चमत्कार और ऐसी नई जागृति केवल आप उत्पन्न कर रहे हैं, क्योंकि आप ही सर्वश्रेष्ठ देव ज्योति और देव तेज के स्त्रोत हैं।...

हम न केवल अपने आपको नीच जीवन से बचाने के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं, किन्तु अन्य आत्माओं के लिए भी उच्च सहानुभूति अनुभव करके उन्हें उनके नीच जीवन से बचाने में सहायता करते हैं। आपकी ज्योति और शक्ति हम जैसे बिल्कुल गए गुज़रे आत्माओं में भी दूसरों की उच्च सेवा के लिए उच्च भाव विकसित करने की आकांक्षा और योग्यता को जागृत कर देती हैं। यह एक आश्चर्य की बात है कि आपने ऐसे मनुष्य पैदा किए हैं, जो देव समाज से एक पैसा भी नहीं लेते, परन्तु अपना सारा या थोड़ा समय देकर इसके सर्वश्रेष्ठ कार्य की सच्चे दिल से सेवा करते हैं।

हमारे हृदयों में जब मैं आपकी अद्वितीय ज्योति और शक्ति के ऐसे स्वर्गीय फलों को देखता हूं, तो मैं आपके देवरूप के सन्मुख गहरी श्रद्धा से झुक जाता हूं। और यह प्रार्थना करने के लिए विवश हो जाता हूं कि मेरी मातृ भूमि - भारत माता - यह अनुभव कर सके कि न केवल भारत, किन्तु सारे मनुष्य मात्र के बचावन हार भारत माता की गोद से ही आविर्भूत हुए हैं, जो एक महा विस्मयजनक घटना है। उनकी पूजा ही भारत को एक शक्तिशाली, संगठित और श्रेष्ठ जाति बना सकती है।

विश्वगत सम्बन्धों में अपनी अवस्था का बोध

जीवनदाता भगवन्!

आपके भीतर हममें नए और उच्च बोध जागृत करने की शक्ति है। आप हमारे पाषाण, हृदय - हीन, कठोर और मुरदा दिलों को जीवित, जागृत, कोमल और भाव - पूर्ण दिलों में परिवर्तित कर रहे हैं। आप मानो मिटट्ी में प्राण संचार करके जड़ को चेतन बना रहे हैं।

आपके इस महान कार्य की लीला मैंने स्वंय अपने तथा दूसरों के जीवन में देखी है। आपके पवित्र प्रभावों में आने से पहले मैं अपने नाना सम्बन्धों में कोई उच्च बोध नहीं रखता था। मैं केवल संस्कार और रिवाज के अनुसार माता के साथ रहता था, परन्तु उनका उपकारी रूप कभी देख नहीं सकता था, और न ही मैं उनके लिए उतनी गहराई में महसूस कर सकता था। आपके अद्वितीय प्रभावों से जीवित होकर मैंने कुछ अनुभव करना आरम्भ किया। मेरे देव समाजी बनने से पहले मेरे पिता जी परलोक सिधार गए थे। मैंने उनके सम्बन्ध में कुछ अपराध किए थे। उनकी मृत्यु के कई साल बाद यह अपहरण मूलक गतियां मेरे सामने आने से मेरे दिल में दुख पैदा करने लगी।

मैंने गलितयां की थी, परन्तु मैं मुरदा जड़ पदार्थ बना रहा। वह गलितयां करते समय या उसके बहुत देर बाद भी मैं उन्हें महसूस न कर सका, परन्तु जब आपके अद्वितीय प्रभावों ने मेरे ऊपर काम करना आरम्भ किया, तब मैंने होश में आना और दुख महसूस करना शुरू किया। इसी प्रकार अनेक बार मैंने अपनी माता के सम्बन्ध में की गई अपनी नीच गतियों को याद किया और दुख महसूस किया है, केवल इसी सम्बन्ध में भी ऐसी अनुपम चेतना और जागृति पैदा कर दी है कि यदि किसी समय मैं अपने किसी नीच अनुराग के अधीन होकर उनके सम्बन्ध में गलत जाता हूं, तो वहीं और उसी समय शरमिन्दगी, पछतावे और दुख की भावना मेरे अन्दर पैदा होती है और मैं अपने आप को धिक्कारने और दूसरों से क्षमा मांगने लगता हूं।... परन्तु पहले ऐसा न था। आपके जीवन दायक देव प्रभावों ने लगातार काम करके मेरे जीवन की जड़ मशीन को एक जीवित गठन में बदल दिया है, जो एक सीमा तक दूसरों का दुख महसूस कर सकती और उससे दुखी हो सकती है।

परलोक सत्य है

परलोक के विषय में भिन्न-भिन्न धारणाएं बनी हुई हैं। परलोक पर विश्वास करने के लिए हमारे पास ठोस धरातल है। वह है पू० भगवान देवात्मा की परलोक के विषय में शिक्षा। परम पू० भगवान देवात्मा सत्य के पूर्ण अनुरागी होकर पूर्ण सत्य की कसौटी पर तोले बिना हमें कोई शिक्षा दे ही नहीं सकते थे। उन्होंने एक ओर इस विषय पर घोर अध्ययन किया, दूसरी ओर बहुत संग्राम करके उन्होंने परलोक वासियों के साथ सम्पर्क करके परलोक के विषय में ज्ञान प्राप्त किया और फिर उन्होंने विज्ञान को आधार बना कर सत्य की कसौटियों पर परख कर इसकी शिक्षा दी।

इसलिए इस में थोड़ा भी सन्देह नहीं कि परलोक सत्य है। जिस प्रकार परम पू० भगवान देवात्मा ने हमें शिक्षा दी है, उसके अनुसार हमारा जीवन ही निर्धारित करता है, कि हम परलोक के किस लोक में जाने के अधिकारी हैं। इस दुनिया से परलोक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वहां पर उच्च और नीच जीवन-धारियों को गडमड होकर नहीं रहना पड़ता। अपने जीवन के उच्च और नीच जीवन स्तर से ही उनका स्थान निर्धारित होता है। हमारा प्रत्येक कर्म हमारे सूक्ष्म सैल बनाने में कार्यरत है। और सूक्ष्म सैलों के अच्छे बुरे बनने पर ही हमारा सूक्ष्म शरीर बनता है।

मुझे एक किताब पढ़ने का अवसर मिला है, जो ऐंथनी बोरजिया द्वारा लिखित है, जिसका नाम है "Life in the world unseen" अर्थात अनदेखी दुनियां की जिन्दगी। यह ऐसी किताब है, जिसमें परलोक की सचाईयों को बताया गया है। सर्वप्रथम जो सचाई बताई गई है, वह यह कि जैसे माता के गर्भ में ही बच्चा जो शारीरिक, मानसिक वा हार्दिक पूंजी लेकर आता है उसी के अनुसार वह विकास पाता है। यह पूंजी उसे अपने बर्जुर्गों से कई नसलों से मिलती है, परन्तु इस दुनियां में रहकर वह जिस प्रकार विनाश वा विकास के कर्म करता है, वह उसकी परलोक की जिन्दगी पर प्रभावी होते हैं।

लेखक ने लिखा है कि इस लोक से परे परलोक में रहने वाले जन के सम्पर्क से ही हम परलोक की असल सचाई को जान सकते हैं। उन्होंने लिखा है कि 1909 ई० में जिस रूह के साथ उनका सम्पर्क हुआ वह 5 वर्ष पहले यह दुनियां छोड़ चुकी थी। उनका नाम राबरट हग बैनसन था, वह ऐडवरड वाईट बैडनसन, जो कैंटरबरी के आर्कबिषिप थे, उनके बेटे थे।

लेखक को एक परलोक वासी मित्र के द्वारा उनका सन्देश मिला कि वह कुछ बताना चाहते हैं और कुछ गल्त बातों को ठीक करना चाहते हैं, परन्तु उन्हें कोई ठीक मीडियम नहीं मिला, परन्तु जब उन्हें इस पृथ्वी का एक पुराना मित्र मिडीयम के रूप में मिला तो उन्होंने परलोक के विषय में बहुत ज्ञानपूर्ण जानकारी दी, जिसको लेखक ने रिकारड करने का सौभाग्य पाया। पहली किताब जो लिखी गई उसका हैडिंग था। Beyond this life" (इस जिन्दगी से परे) और दूसरी The world useen लिखी, जिसको मैंने पढ़ा है और उसकी हितकर जानकारी मैं पाठकों को अवश्य

देना चाहूँगी।

पहली किताब में तो केवल नीच लोकों और उच्च लोकों का वर्णन है। इस किताब में उन लोकों को विजिट करके उन्होंने अपने तजरबे लिखवाए हैं।

सर्वप्रथम उन्होंने लिखवाया कि मैं क्या हूँ, यह कोई अर्थ नहीं रखता, इस पृथ्वी के पद, पोजीशन परलोक में हम साथ नहीं ले जा सकते ।

उन्होंने लिखा है कि इस पृथ्वी पर मैंने अधिकतर मानसिक काम किए थे, शारीरिक परिश्रम नहीं किया था। मेरा रूझान ईसाई मत की ओर था, उसकी शिक्षा, रस्मों रिवाज में मैं सन्तुष्ट था, परन्तु परलोक में आकर उसके मायने ही बदल गए। यहां पुरानी धार्मिक किताबों के अनुसार ही हमें शिक्षा दी जाती थी। जो परलोक में आकर पता लगा कि वह शिक्षा गलत थी। इस दुनियां में रहते हुए भी मेरे अन्दर प्रश्न होते थे, परन्तु कुछ भी साफ साफ दिखाई नहीं देता था। धार्मिक किताबें लिखने वाले वास्तव में स्वंय ही सचाई नहीं जानते, वह मेरे प्रश्नों का उत्तर क्या देते।

मृत्यु के समय का अनुभव :- जैसे स्वप्न में हमारा शरीर वास्तव में काम नहीं करता, उसी प्रकार मेरा दिमाग और सोच चल रही थी, ऐसे लग रहा था कि जैसे हवा में तैर रहा हूँ, थोड़ी देर बाद मैं खड़ा था, मेरा शरीर उसी प्रकार पड़ा था, परन्तु मैं वही शक्ल, परन्तु सेहत मन्द हालत में और उसी प्रकार के कपड़ों में खड़ा था। तब मुझे आभास हुआ कि मैं मर चुका हूँ। तभी मैंने अपना एक पुराना पादरी साथी देखा, जो कुछ वर्ष पहले मर चुका था। वह भी मेरे जैसे कपड़े में था। पादरी के कपड़ों में नहीं थे। हमने एक दूसरे को Greet किया और उसी समय वह विश्वास कि कोई Judgement Day होता है, या कोई तुम्हारे पाप पुण्य का हिसाब रखने की सीट बनी होती है, मेरे दिमाग से निकल गया। मिथ्या स्वर्ग (Heaven) नर्क (Hell) की जो रूप रेखा बताई है, वह बिल्कुल झूठ है।

मेरे साथी ने मेरा खूब स्वागत किया और मुझे बहुत ही विस्मय जनक जिन्दगी देखने के लिए तैयार किया। उन्होंने मुझे वह स्थान छोड़ने को कहा, मैंने आखरी बार उस स्थान को देखा, अपने बिमार शरीर को मुर्दा पड़े देखकर मैं कुछ भी प्रभावित नहीं हुआ। फिर मेरे साथी ने मुझे अपने साथ जाने को कहा।

वहां पर जीवन के उच्च वा नीच की स्तर के हिसाब से आपका स्थान निर्धारित होता है, वहां कोई अन्याय नहीं, न ही कोई रिश्वत देकर या किसी अल्ला, वाहगुरु, Charist का नाम जपने से तुम्हें उच्च लोक प्राप्त होता है। यह हकीकत तो परलोक में जाते ही साफ हो जाती है।

एक ओर उन जनों के लिए जो इस दुनियां में उच्च जीवन रखते हैं, परलोक इस संसार से कहीं आकर्षणीय स्थान है। उच्च जीवन का अर्थ यह नहीं कि हम कुछ पापों से बचे हुए हैं, कोई कत्लेआम नहीं करते, गाली गलौच नहीं करते मोटी बेईमानी नहीं करते, उच्च जीवन का अर्थ है कि हम निर्माण का क्या काम करते हैं। हम अपने से निकलकर दूसरों के लिए क्या करते हैं, सचाई का कितना साथ देते हैं। निस्वार्थ परोपकार ही परलोक में सहायकारी है। किसी धर्म को मानना या न

मानना कोई अर्थ नहीं रखता, न ही आप जिनका नाम जपते रहे, वह आपकी कोई भी सहायता कर सकते हैं। परलोक में तो दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है।

बड़े बड़े पदाधारियों, अमीरों की दुर्दशा का वर्णन किया कि वह कैसे दुखी जिन्दगी काटते हैं। बड़े धर्म के पुजारी जो अपने उन मिथ्या विश्वासों से नहीं निकल सकते कैसे मानसिक तौर पर विकलांग दिखाई देते हैं। परन्तु सारी उमर दूसरों के लिए जीने वाले चाहे इस दुनियां में कितने ही तिरस्कारे गए हों, आलीशान हालातों को प्राप्त करते है। हमारे कर्मो का ही नहीं हमारी चिन्ताओं का भी वहां हिसाब है।

उस परलोक वासी आत्मा ने जहां उच्च लोकों का ऐसा शानदार नक्शा खींचा है, जहां परोपकारी रूहों का वास है, वहां नीच जीवन धारियों की तरसनाक, दुखदाई हालात का वर्णन भी किया है, उन्होंने यह भी लिखा है कि उच्च लोक वासी आत्माएं किस प्रकार हमारी सहायता करती हैं, स्वंय को उन्होंने Medium लोक का वासी बताया, उसकी सुन्दरता के बारे में भी उन्होंने लिखा है कि वर्णन नहीं की जा सकती, ऊपर के Realems की सुन्दरता तो कल्पना से भी परे है। उच्च लोकों से कभी कभी आत्माएं आती हैं, तो उनके प्रवेश से ही जैसे रूहें पवित्रता के जबरदस्त प्रभाव हासिल करती हैं। जैसे तपते रेगिस्तान में ठण्डी हवाओं के झोंके।

उन्होंने पादरी होकर अपने धर्म की मिथ्याओं को भी उस लोक में जाकर अनुभव किया और दुख अनुभव किया कि जो मैंने झूठ का प्रचार किया, उसको कैसे ठीक करूं, इसके लिए मैं तड़पता हूँ।

काश! हम इन सचाईयो को अनुभव करके जीवन का रुख बदल सकें।

सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

पढ़े लिखे लोगों में धार्मिक चोंचले

कहा जाता है कि धर्म के नाम पर होने वाली कुरीतियों और आडंबरपूर्ण आयोजन केवल अशिक्षित वर्ग तक ही सीमित हुआ करते हैं, लेकिन आज के दौर में जितनी तेजी से लोग शिक्षित हो रहे हैं उतनी ही तेजी से उन में धार्मिक चोंचलेबाजी भी बढ़ती जा रही है

शिक्षा प्रणाली की विफलता

शिक्षा का असली मकसद होता है इंसान में सही गलत की पहचान करने की समझ जगाना, उस में सही फैसला लेने की काबलीयत पैदा करना, उसे दुनिया से और स्कूल कालेज से जो भी जानकारियां और तजरबे हासिल हो रहे हैं उन का सही समय पर सही तरीके से इस्तेमाल करना सिखाना, और सब से जरूरी बात, उसे मानसिक और भावनात्मक रूप से इतना ताकतवर बनाना कि वह जीवन की चुनौतियों व विफलताओं को आसानी से न सिर्फ स्वीकार करे, बल्कि उन का डट कर सामना भी करे।

अब आप ही बताइए, क्या आजकल की शिक्षा प्रणाली इन में से अपना कोई भी मकसद पूरा कर रही है? आजकल की शिक्षा इंसान को सिर्फ रेस के लिए तैयार कर रही है, प्रतियोगिताओं में घोड़े की तरह दौड़ने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।

आज की शिक्षा सिखाती है - भागते जाओ, भागते जाओ, तुम्हें यह मिलेगा तुम्हें वह मिलेगा, परन्तु वह कभी भी यह नहीं सिखाती कि जब कभी भागते भागते गिर पड़ो, तो क्या करना है, कैसे खुद को संभालना है। सो, जब गिरने का समय आता है, इंसान संभलने के लिए इधरउधर सहारे खोजने लगता है। मगर आजकल संसार में सहारे मिलते कहां हैं, बुरे वक्त में सगे भाई भी कन्नी काट लेते हैं, ऐसे में वह धर्म की शरण में जाता है जहां कोई पंडित, कोई मौलवी, कोई ज्योतिषी उसे बता देता है, 'अरे, यह समस्या तो कुछ नहीं है, ये धार्मिक कर्मकांड कर लो, सब ठीक हो जाएगा।

बस समझिए, जैसे उसे अपनी बीमारी के लिए एक हकीम मिल गया हो, जैसे जैसे वह उस के कहे अनुसार धार्मिक कर्मकांड करता जाता है, पंडित की जेब भरती जाती है और उस का विश्वास बना रहता है कि अब सब कुछ ठीक हो जाएगा।

जरा सोचिए, एक विश्वास जगाने के लिए वह इतना कुछ करता है। यदि यह विश्वास उसे अपनी शिक्षा के साथ ही मिला होता कि खुद पर भरोसा रखो, सब्र और समझ के साथ सही दिशा में काम करते रहो, फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा, तो क्या उसे किसी धार्मिक सहारे की जरूरत पड़ती? कभी नहीं।

धर्म का धंधा, न हो मंदा

शिक्षित मध्यवर्ग में अपने भविष्य को ले कर सब से ज्यादा डर और असुरक्षा की भावना पनपने लगी है। पढ़े लिखे लोग भी आज कम समय में सब कुछ पाना चाहते हैं और जो है, उसे खोने से डरते हैं, इसलिए जब कोई उन से कहता है, फलां फलां धार्मिक कर्मकांड करने से भगवान खुश होंगे और तुम्हें भी खुश रखेंगे तो वे बिना दिमाग लगाए धार्मिक चोंचलों की चपेट में आ जाते है, साथ ही, धार्मिक कथा कहानियों के जरिए उन के मन में ऐसे डर भर दिए जाते हैं कि वे चाह कर भी उन की गरिफ्त से नहीं निकल पाते। उन्हें लगने लगता है कि यदि उन्होंने फलां पूजा संपन्न नहीं कराई तो उन का बड़ा अनर्थ हो सकता है। लेकिन कभी कभी इस अंध - भक्ति के बड़े भयंकर परिणाम सामने आते हैं। व्रतों और साधनाओं को पूरा करने में लोग अपनी जान भी गंवा बैठते हैं।

मेरे सामने की ही बात है, एक पढ़े लिखे 32

वर्षीय चार्टर्ड अकांउटैंट ने फ्लैट लिया। उसके मातापिता बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उन्होंने गृहप्रवेश से पहले 3 दिनों तक अलग अलग तरह के यज्ञ और पूजा का आयोजन रखा। लड़के को उन्हीं दिनों बुखार आया। डाक्टर के बारबार अगाह करने पर भी वह 2 दिन तक घर में चल रहे पूजापाठ के चक्कर में ब्लड टैस्ट टालता रहा। वह अपने मातापिता से उस बारे में बात करता तो वे कहते, 'बुखार ही तो है, ज्यादा काम करने से हुआ होगा, भगवान सब ठीक करेंगे'।

जब उसे बहुत कमजोरी आने लगी तो डाक्टर ने जबरदस्ती उस का ब्लड सैंपल ले कर लैबोरेटरी भेजा। उसे डेंगू हुआ था, डाक्टर ने उसे तुरंत ऐडमिट होने के लिए कहा। मगर वह ऐडमिट कैसे होता? अगली सुबह 3 दिन से चल रही पूजा का समापन यज्ञ होना था, घर में सभी नाते रिश्तेदार जुटे थे, उसने सोचा, एक रात की ही बात है, किसी तरह काट लेता हूं, मां भी यही कह रही थी, 'तुम्हारे नाम से संकल्प लिया है, सो तुम्हारा यज्ञ में रहना जरूरी है, वरना अपशकुन होगा। भगवान पर भरोसा रखो, वे सब ठीक करेंगे।'

अगली सबुह उस के पेट में तेज दर्द हुआ, तो उसे जल्दबाजी में अस्पताल लाया गया, वहां पहुंचते ही उसकी मृत्यु हो गई।

जरा सोचिए, कहां गया उस पूजापाठ का प्रताप और क्या हुआ उस गारंटी का जो पंडित ने दी थी कि यह पूजा करने पर नए घर में सब कुशलमंगल होगा।

इंजीनियर पिता और एमए पास माता का सीए बेटा डेंगू से मरा, वह भी इसलिए क्योंकि उस ने पूजापाठ के चक्कर में न तो समय से ब्लड टैस्ट कराया और न ही अस्पताल में ऐडमिट हुआ, जबकि आजकल अनपढ़ लोग भी सुनसुन कर इतना तो जान ही गए हैं कि डेंगू, चिकनगुनिया, स्वाईन फ्लू जैसे बुखारों में कोई रिस्क नहीं लेना चाहिए, इन में जान भी जा सकती है।

यह कैसी धर्मांधता है, यह कैसा अंधविश्वास है जो एक शिक्षित इंसान की भी सोचने समझने की शक्ति हर लेता है। हद तो यह है कि अंधविश्वास इतना गहरा है कि उस पंडे से जवाब मांगने की भी हिम्मत नहीं होती। वैसे भी पंडे इतने चतुर होते हैं कि हर बात का उत्तर उन के पास होता है।

मीडिया प्रचार से बढ़ता धर्म का बुखार

पहले कुछ लोग ही पंडितों ज्योतिषियों के चक्कर में पड़ते थे क्योंकि वहां उन्हें अच्छीखासी दक्षिणा देनी पड़ती थी। मगर अब ये सभी बातें न्यूजचैनल, पत्रपत्रिकाओं, इंटरनैट पर हर जगह फ्री में उपलब्ध हैं, हर जगह कोई न कोई बाबा, वास्तुशास्त्री, ज्योतिषी, टैरो रीडर आदि बैठ कर बता रहा होता है कि किस दिन क्या उपाय करने पर क्या लाभ होगा। क्या नहीं करने पर क्या हानि होगी। पढ़े लिखे लोग भी यह सुन कर अपने अंदर बैठे डर को निकालने के लिए या कुछ ज्यादा पाने के लालच में ऐसे सब उपाय करने लगते हैं।

लोगों के धार्मिक अंधविश्वास में बढ़ते रुझान को समझ कर ऐसी अनेक वैबसाइटें बन गई हैं जो ज्योतिष फल, कर्मकांड, टोने टोटकों पर आधारित होती हैं, ये आप के लिए घर बैठे ही पूजा का लाभ, दर्शन लाभ, श्रीयंत्र, रुद्राक्ष, अभिमंत्रित अंगूठियां, नग और मालाएं जैसे उपक्रम आयोजित कर देती हैं। उन के द्वारा आप घर बैठे बैठे मंदिरों का महाप्रसाद भी प्राप्त कर सकते है। इसके लिए वे ऑनलाइन पेमैंट ले लेती हैं। इस तरह से मीडिया और इंटरनैट की वजह से भी धर्म का धंधा खूब फलफूल रहा है।

हम में भी है दम

आजकल धार्मिक आयोजनों की आड़ में यही तो कहा जा रहा है कि हमें कोई हलके में न ले, हम भी कुछ हैं। त्योहार, धार्मिक आयोजन समाज में शोऔफ का साधन बन गए हैं। पहले लोग सिर्फ बेटे बेटी की शादियों में अपनी हैसियत का खुला प्रदर्शन करते थे ताकि उन की समाज में इज्जत बढ़े लकिन

अब यह धार्मिक चोंचलेबाजियों के माध्यम से बहुत बढ़चढ़कर होने लगा है।

गणपति उत्सव में किस का गणपति बड़ा, किस का पंडाल बड़ा, मोहल्ले में नवरात्रों में किस ने बड़ी मंडली बुला कर जागरण कराया, दीवाली पर किस ने ज्यादा लाइट लगाई, पटाखे फोड़े, हल्दी कुकमुम पर किस ने किस को क्या दिया..... इन्हीं सब दिखावे और शोशेबाजी से पढ़े लिखे लोग भी अपना अहंकार संतुष्ट करते हैं।

भक्ति या गेट टूगैदर

धार्मिक चोंचले मेलजोल के भी बहाने बन गए हैं, लोगों को अपने मित्रों रिश्तेदारों की बुलाना हो, फैमिली गैदरिंग करनी हो, उन से कुछ लेनदेन निबटाना हो तो जागरण, कथाकीर्तिन आदि रख लेते हैं, लेकिन उन में बातें वही होती हैं, किसने क्या पहना है, कौन क्या लाया है, किसे क्या देना है आदि।

एक बार हमारे पास जागरण का न्योता आया। मैंने फोन करके पूछा, "आंटीजी, कोई विशेष अवसर है क्या?", वे बोलीं "हां, हमारी 50 वीं मैरिज ऐनिवर्सरी है।" मैंने कहा, "फिर तो कोई बढ़िया पार्टी होनी चाहिए थी।" इस पर वे पलट कर बोली, "अरे, इसे पार्टी ही समझो, बीच में केक भी कटेगा।"

थोड़ा और कुरेदने पर कहने लगीं, "वैसे तो हम पार्टी ही रखने वाले थे लेकिन खर्चा ज्यादा हो रहा था, फिर सोच समझ कर जागरण रख लिया, मेहमान शाम तक आएंगे। खाने में सिंपल आलू, पूरी, कद्दू से काम चल जाएगा। जागरण में किसी के रुकने के लिए कमरा भी बुक नहीं करना पड़ेगा। कुछ तो केक कटिंग के बाद ही लौट जाएंगे, बाकी जो रुकेंगे, वे सुबह चनापूरी का प्रसाद खा चलते बनेंगे। जागरण में कोई रिटर्न गिफ्ट भी ऐक्स्पैक्ट नहीं करेगा और नाम भी हो जाएगा कि हमने ऐनिवर्सरी पर जागरण करवाया।"

मैंने मन ही मन सोचा, 'वाह, भगवान के नाम पर क्या प्लानिंग की है, मानना पड़ेगा।' वे एक बड़े कालेज से रिटायर लैक्चरर थीं।

सवाल तो उठेगा

यदि चाइल्ड डैवलपमैंट की बात करें तो जिज्ञासु होना, सवाल पूछना, बच्चे के व्यक्तित्त्व का एक बहुत बड़ा गुण माना जाता है। शिक्षा में इस गुण का बहुत महत्त्व है क्योंकि जिस के भीतर सवाल उठते हैं, वही खोज सकता है, कुछ नया जान सकता है। हमारे जीवन में धार्मिक चोंचलों की घुसपैठ तभी रुक सकती है जब उन पर सवाल उठाए जाएं कि ये क्यों किए जा रहे हैं, इन के पीछे क्या समझ है, ये जो रटेरटाए मंत्र बोले जा रहे हैं, इन का क्या अर्थ है? तो काफी धुंध खुद ही छंट जाएगी।

एक बार एक शिक्षक के घर में सत्यनारायण की कथा चल रही थी। कथा में पंडितजी बारबार यही वर्णन कर रहे थे कि फलां ने सत्यनारायण की कथा कराई तो उसका यह भला हुआ, फलां ने नहीं कराई तो उस की ऐसी ऐसी हानि हो गई। घर के सभी लोग बड़े भक्तिभाव से कथा सुन रहे थे। वहां पर एक किशोरवय भी था जो पूरी कथा ध्यानपूर्वक सुन रहा था।

जब कथा पूरी हुई तो वह पूछने लगा, "पंडितजी, पूरी कथा में असली कथा की तो बात ही नहीं आई, कथा और व्रत करने और न करने के फायदे नुकसान तो बताए गए मगर वह कथा कौन सी थी जो पहली बार की गई, वह तो आप ने सुनाई ही नहीं।" इस बात पर पंडित जी भी निरुत्तर हो गए। कहने लगे कि ईश्वर भक्ति में आस्था रखी जाती है, सवाल नहीं पूछे जाते।

हमारे एक रिश्तेदार कृष्णभक्त हैं। वे जहां भी जाते हैं अपने साथ भगवान की मूर्तियों की पूरी बास्केट ले कर जाते हैं। उनमें 3 मूर्तियां तो लड्डू गोपाल की ही है। वे तीनों को भोग लगाते हैं और शयन भी कराते हैं। एक बार जब वे मेरे यहां आए तो मेरे बेटे ने उन से पूछ लिया, "आप के पास ये 3 एक जैसे भगवान क्यों हैं, क्या ये आपस में भाई हैं?" वे बोले, "नहीं, ये एक ही लड्डू गोपाल है।" इस पर

बेटा बोला, "जब ये तीनों एक ही हैं तो आप तीनों की अलग अलग पूजा क्यों करते हैं?"

जो बात बच्चों के दिमाग में आती है, वह बड़ों के दिमाग में भी तो आती होगी, मगर पता नहीं क्यों वे धर्म से जुड़े सवाल पूछने से घबराते हैं। तीज व्रत की कथा में कुछ दिलचस्प बातें आती हैं, जैसे जो स्त्री इस व्रत के दौरान सो जाती है वह अगले जन्म में अजगर बनती है, जो शक्कर खाती है वह मक्खी, जो व्रत नहीं करती वह विधवा, जो जल पी लेती है वह मछली बन जाती है, और भी न जाने क्या क्या. ..... जब इस कहानी को एक शिक्षित महिला सुनती और पढ़ती है तो वह क्यों कोई सवाल नहीं उठाती, यह सोचने वाली बात है।

लोग धर्म और आस्था के नाम पर सदियों से फैले हुए इस मकड़जाल से तभी बच सकते हैं जब इस का खंडन शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत हो, बच्चों के लिए वही बात सही होती है जो उन के टीचर उन्हें समझाते हैं, जो उन की पुस्तकों में होता है। यदि उनको शुरू से ही स्कूल में सही समझ मिले तो वे इस धार्मिक दलदल से बाहर आ सकते हैं।

मगर सवाल वही है, बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे? यह देश के लिए बहुत खराब है कि शिक्षा व्यवस्था की देखरेख उनके हाथों में है जो अपनी चुनावी सफलता के लिए खुद जम कर धार्मिक चोंचलेबाजियां करते हैं।

(सरिता से साभार)

95 की उम्र में भी गरीबों के लिए घर बनवा रहे कार्टर

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर मंगलवार को 95 साल के हो गए। इस उम्र में भी वे बिना थके गरीबों की ज़िंदगी सुगम बनाने के लिए काम कर रहे हैं। जिमी और उनकी पत्नी रोजलीन अमेरिका, एशिया व अफ्रीका समेत कई देशों में पिछले 36 सालों से हजारों गरीब लोगों को घर दिला चुके हैं। कार्टर अपने जन्मदिन के सिलसिले में अगले सप्ताह नैशविले में मानवता के लिए आश्रय नाम से एक कार्यक्रम में शामिल होंगे।

1 अक्तूबर, 1924 को पैदा हुए कार्टर आज अमेरिका के इतिहास में सबसे ज्यादा उम्र तक जीवित रहने वाले राष्ट्रपति हैं। उनसे पहले जॉर्ज एच. डब्लू. बुश के नाम पर यह रिकॉर्ड था। बुश का पिछले साल नवंबर में 94 साल 171 दिन की उम्र में निधन हो गया था। कार्टर ने इस साल मार्च में ही बुश के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया था।

नोबेल पुरस्कार पाने वाले कुछ अमेरिकी राष्ट्रपतियों में शामिल कार्टर ने हाल ही में एक छोटे कस्बे में एक नया हेल्थ क्लिनिक शुरू किया था, क्योंकि इस शहर में कई महीनों से कोई फिजिशियन नहीं था। यही नहीं उन्होंने अपने होम टाउन के आधे लोगों को बिजली उपलब्ध कराने के लिए अपनी निजी संपति को भी सोलर बिजली घर लगाने के लिए दे दिया।

कार्टर को 2016 में चौथे स्टेज का कैंसर हो गया था। अपने इलाज के दौरान भी वह अपना समय जरूरतमंदों के लिए घर बनाने के कार्यों के लिए लगाते थे। हालांकि, अब उनकी बिमारी पूरी तरह ठीक हो गई है। कार्टर सेंटर के एक प्रवक्ता ने बताया कार्टर दुनिया में अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर गरीबों के लिए काम कर रहे हैं। वह अब तक दुनिया के लाखों लोगों के लिए घर उपलब्ध कराने में मदद कर चुके है।

नये घर में सभा

6.10.2019 :- कुछ समय पहले पँचकूला में शुरू हुए श्रीमान यशपाल सिंगल जी से विचार विमर्श के बाद उनके नये गृह निवास सैक्टर 20, फ्लैट न० 1302 में सभा का प्रोग्राम रखा गया। सभा शाम के करीब 4.30 बजे रखी गई। जिसमें उन्होंने नजदीकी धर्म सम्बन्धियों को भी भी निमन्त्रण दिया। सभा में डेराबस्सी से श्रीमान ओम प्रकाश वर्मा जी, चण्डीगढ़ से डा० विनोद खेड़ा जी, श्रीमति सुरजीत बराड़, चमन जी का परिवार, पँचकूला से श्रीमान D.S. चौहान, व श्रीमान सुभाष अग्रवाल जी के परिवारिक जन व अन्य कई धर्म सम्बन्धी और श्रीमान सिंगल साहब के पारिवारिक जन व कुछ नये आमन्त्रित जन भी पधारे। इसमें कुल हाजरी 25 से ज्यादा थी। श्रीमान जगदीश प्रसाद जी ने सभा से पहले पहुँचकर इसकी तैयारी करवायी। सभा करवाने के लिए सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से पधारे। सिंगल परिवार ने सभा के बाद सभी मौजूद जनों को बड़ी खुशी से जाते हुए कई प्रकार के मिष्ठान, नमकीन, कोल्ड ड्रिंक, जलपान आदि कराया। सभी को फल भी वितरित किए। इस प्रकार उन्होंने अपनी सेवाओं से लाद दिया। उन्होंने चाहवान जनों को गृह के दर्शन करवाए।

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी :- सर्वप्रथम गुरू महाराज की स्थापित की गई फोटो का फूलों के हार द्वारा अर्चन किया गया। देवस्तोत्र का गान व व्याख्या के बाद सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की। श्रीमान जगदीश जी द्वारा फिर एक कामना विषयक भजन "तुम्हारे दर से हे सतगुरू धर्म का दान मिल जाये" का गान किया। इसके बाद सभापति जी ने सभा में बताया कि धर्म क्या है जिसके बारे में हमने प्रार्थना की हैं धर्म अच्छा बनने, नेक बनने का नाम है। जो व्यवहार से भला है नेक है वह चाहे हिन्दु हो चाहे मुसलमान हो अथवा कोई और हो वह उतना धर्मवान है। लेकिन नेक कौन होता है? नेक होने की निशानी यह है कि वह किसी की हानि नहीं करेगा। अपनी भी और किसी दूसरे की जो जन हानि नहीं करता वह नेक है इससे आगे उन्होंने बताया कि मिथ्या विश्वास भी धर्म में अडचन हैं। यह सत्य भी अभी तक बहुत जनों को साफ नहीं हैं कि नेचर क्या है और इसमें विकास कैसे हुआ व आगे भी होता रहेगा। असल में नेचर जड़ और शक्ति सम्पन्न अनादि है। इसलिए इसको बनाने वाला कोई अन्य नहीं है। सभी अस्तित्व पत्थर, पहाड़, धरती, सूर्य, चन्द्रमा ग्रह आदि सब भौतिक जगत फिर पेड़-पौधों का (वनस्पति) जगत व पशु जगत व मनुष्य जगत आदि सब नेचर के ही विकास क्रम की लीला है इस विकास क्रम को न समझने के कारण मनुष्य बहुत सी मिथ्याओं में रहता हैं जितना नेचर की सत्य घटनाओं के सच्चे कारणों का मनुष्य ज्ञानी और बोधी होगा उतना ही मनुष्य सच्चा लाभान्वित होता जाएगा। विकास क्रम में ही देव धर्म के संस्थापक देव आत्मा हुए उन्होंने नेचर के नियमों पर ही स्थापित सत्य धर्म का ज्ञान दिया। उनकी ही शिक्षा के अनुसार धर्म के मुख्य अँग हैं कि मनुष्य एक तरफ सब तरह के पापाचारों व दुराचारों से मुक्ति हासिल करे व दूसरा मनुष्य उच्च भाव (सदगुण) पैदा करे। श्रद्धा-सम्मान, शुक्रगुजारी व हमदर्दी (दया) के भावों के बगैर कोई धर्म नहीं होता। यह भाव जितने जिस मनुष्य में आएंगे वह अपने सम्बन्धों में माता पिता और बच्चों, पति-पत्नी, भाई बहनों का चाहे कोई भी सम्बन्ध हो उसमें उतना स्वर्ग आने

लगता है इन उच्च भावों के बगैर मनुष्य पशु समान है, हिंसक भेड़ियों व सांप की तरह बना रहता है फिर अपने उपकारियों को भी सताता व तड़पाता और नर्क पैदा करता है। इससे आगे अगर कोई अपनी कमियों, नीच गतियों को सामने लाने का व उन्हें लिखने का साधन करने लग जाए तो और धर्म मार्ग में अच्छे तरीके से आगे बढ़ता है।

सभा जहाँ नये जनों के लिए ज्ञानवर्द्धक थी वहाँ पुराने धर्म सम्बन्धियों ने भी फायदा उठाया। सभापति जी ने वा प्राय: सब आने वालों ने उन्हें नये गृह की मुबारकबाद दी। अन्त में फैसला किया गया कि हर महीने के पहले रविवार पँचकूला में ध र्मसम्बन्धियों के यहाँ बारी बारी सभा रखी जाएगी।

रवाना होते वक्त श्रीमान सिंगल साहब आदर सहित कलोनी के बाहरी गेट तक छोड़ने के लिए आए।

(एक हाजरीन)

एक साधन

बचपन से जब से मैंने होश सम्भाली है, किसी न किसी सत्संग से जुड़ा हुआ हूँ। कई अलग-2 धर्मों का ज्ञान प्राप्त किया, दूसरों को भी प्रचार करता रहा। कई लोग प्रभावित भी होते और मुझे अच्छा व धर्मवान समझते। देव समाज की सत्संग सभाओं से भी कई सालों से जुड़ा हुआ होकर सेवकी भी ग्रहण की हुई है। बहुत तरह की मिथ्या और मोटे पापों से बचा हुआ हूँ। काफी अरसे से बड़े सुयोग्य कर्मचारियों से सम्पर्क भी बनाए हुए हूँ परन्तु इतना सब कुछ होकर भी अपने आप से, अपने भीतर के मसाले से बिल्कुल अनजान हूँ। अभी कुछ समय पहले श्रीमान कनल जी की पुस्तक "आध्यात्मिक चेतना के नये स्वर" में से नीच घृणा के विषय में पढ़कर मुझे पहले तो औरों के जीवन में नीच घृणा की घटनाएँ व उनके परिणाम सामने आते रहे फिर अपने बारे में विचार किया तो बहुत समय तक तो मुझे यह सामने ही न आया कि मेरे अन्दर भी नीच घृणा है और यह मुझे और मेरे द्वारा दूसरों को नुकसान करती है। फिर कुछ अच्छी प्रेरणाओं के मिलने से काफी ज़ोर लगाने से मुझे इस बारे में अपना आप कुछ-कुछ नज़र आने लगा। ज्यूँ-ज्यूँ कुछ मामूली सा भी नज़र आता गया मेरे पैरों तले से जैसे जमीन खिसकती जाए कि मेरे अन्दर भी नीच घृणा है, मेरा तो कभी इस तरफ ध्यान ही नहीं गया था। मैं तो अपने आपको अन्दर से बहुत सुन्दर, निर्दोष व साफ देखता रहा हूँ, यह कालिख मेरे अन्दर भी है, इस जहर के इंजेक्शन मैंने अपने को और दूसरों को भी लगाएँ हैं?

प्रार्थना शील होकर और बहुत जोर लगाकर मुझ अन्धे के सामने नीच घृणा के सम्बन्ध में मेरी यह कुछ घटनाएँ आयीं :-

मेरी नज़र में जब किसी ने मेरे साथ कोई गलत व्यवहार किया है तो मैं कमजोर होने के कारण यदि उसे उसका जवाब न दे सका तो मन मन में उसके लिए बुरे ख्याल व उसकी हानि करने की सोचता रहा।

मेरी किसी सोच विचार व किसी क्रिया के विरूद्ध जब कोई जन प्रतिक्रिया दे, चाहे मुझे उसके लिए समझाने वाला अथवा रोक टोक करने

वाला कोई बड़ा हो अथवा मेरा कोई हितकारी भी हो, उस समय मुझे अपनी कोई कमी नहीं दिखती बल्कि समझाने वाले को गलत देखा है व उससे दूरी बनाई है।

मैने जब किसी से कोई सहायता चाही है और मेरी इच्छा मुताबिक उस जन से सहायता नहीं मिलती तो मेरे अन्दर नीच घृणा उपजती है।

मेरे एक सम्मान के योग्य उपकारी जन जिनसे मैने बहुत उपकार पाएं है उन्होंने मेरी मान्सिक और हार्दिक बहुत सेवा की है। डा० होने के नाते उन्होंने मुझे बिमार होने पर कई बार अपनी तरफ से दवाईयाँ देकर शारीरिक हैल्प की है लेकिन एक-दो बार मेरी ईच्छानुसार वह नगदी रूपयों से मेरी सहायता नहीं कर सकें। तो मैंने कई सालों के उनके उपकार, सहायता आदि भुलाकर, जो उनका रूप मुझे आकर्षणीय व हितकारी लगता था वह सब ओझल हो गया। मैं मन मन में उन्हें कोसने लगा व मन में थोड़ी दूरी भी बना ली थी।

मेरे मोह बन्धन के कारण मेरे किसी चहेते जन के बारे में कोई कुछ कह दे, भले ही वह बात कितनी ही सत्य हो, मेरे भले के लिए हो परन्तु मुझे वह नागवार गुजरता है व मैं मन मन में बुड़बुड़ाता रहता हूँ।

किसी जन से अपनी कोई चीज़ वापिस लेनी हो और वह वायदे के मुताबिक न दे सके तो मेरे अन्दर उस जन के लिए नीच घृणा जागती है।

एक बार मेरे एक चहेते जन को कुत्ते ने काट खाया उससे मुझे बहुत तकलीफ हुई और कुत्ते के प्रति ऐसी घृणा जागी कि मैंने कुत्ते को जहर देकर मार दिया।

जब मुझे नीच घृणा पैदा होती है तो हितकारी हितकारी नहीं दिखता, उपकारी उपकारी नहीं दिखता, बड़ा बड़ा नहीं दिखता वह सिर्फ गलत, तानाशाह और रोकटोक करने वाला सिर्फ कमियाँ देखने वाला महसूस होता है, पूरी दृष्टि उल्टी हो जाती है। अपने अन्दर का चैन खो बैठता हूँ।

एक घर में ठहर कर वहाँ से कई प्रकार की सेवाएँ पा रहा था परन्तु मेरी ईच्छानुसार मुझे एक-दो बार किसी मामूली सी खाने की चीज़ के लिए भी न पूछा गया तो मेरे अन्दर खलबली सी पैदा हो गई और मन ही मन में उनके खिलाफ बुड़बुड़ाता रहा, उस घटिया अवस्था से मैं एक उपकारी की सहायता से निकला और तसल्ली पाई अन्यथा न जाने कब तक अन्दर से जलता भुनता रहता।

एक दुकानदार को यह महसूस हुआ कि मेरे द्वारा उसकी कोई खाने की वस्तु का अपमान हुआ है, उसने मुझे उसके लिए उलाहना दिया, हालांकि उसका अन्दाजा गलत था परन्तु मैंने उसके कहने पर कोई पोजिटिव रेस्पोन्स न दिखाया, न उस बात को क्लीयर किया अपने अन्दर लेकिन उसके लिए घृणा से भरकर मन मन में उसे घटिया कहता रहा व यह निश्चय करने लगा कि अब के बाद ऐसे जन से कोई वस्तु खरीदनी ही नहीं चाहिए।

इसके अलावा इस प्रकार के कई दृश्य मेरे सामने आ रहे हैं जब मेरी इच्छानुसार मुझे किसी से हमदर्दी न मिली व सम्मान न दिया गया अथवा मेरे किसी भी सुख पर चोट लगी तो मेरे अन्दर उन जनों के प्रति नीच घृणा जाग पड़ी।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

शुभ उदघाटन

13 अक्तूबर, 2019 रविवार के दिन शाम को चण्डीगढ़ के निकट उभर रहे नये सिटी में सँगरूर निवासी श्रीमान सीता राम जी के पुत्र हमारे प्रिय विशिष्ट धर्म सम्बन्धी डा० नवजोत जी के नाम 500 गज का एक प्लाट गर्वनमैन्ट की ओर से रजिस्टर्ड हुआ है, उस सफेद जगह पर गृह निर्माण का उदघाटन किया गया। इसके लिए सँगरूर से डा० नवजोत जी की माता जी और उनकी धर्मपत्नी और बेटी और 2 बहनों के परिवार और बच्चे और डिम्पल जी के मोहाली निवासी भाई परिवार समेत पहुँचे।

श्रीमान बलदेव सिंह जी भी इस मकसद के लिए डा० नवजोत जी के साथ पहुँच गये थे। ठीक 4:30 बजे प्लाट के अन्दर खड़े होकर सब धर्म सम्बन्धियों ने पहले भगवान देवात्मा की जय ध्वनि की फिर बीबी डिम्पल कालड़ा ने और साथियों के साथ मिलकर "शुभ आकांक्षी सकल हमारे" शीर्षक भजन का गान किया। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने नंगे पाँव परम पूजनीय भगवान को श्रद्धा पूर्वक स्मरण करते हुए सहाय प्रार्थना की और सारे परिवार को इस अवसर पर खासकर डा० साहब को हार्दिक मुबारकबाद दी और अपनी हार्दिक प्रसन्नता का प्रकाश किया। और इस घर में गुरू महाराज के सेवकों का गृह बनने पर निवास करना और सेवकों का गुरू महाराज और उनके कारज से जुड़े रहने और सेवाकारी होने की गहरे दिल से कामना की। अन्त में गुरू महाराज की जय ध्वनि की गई। मिष्ठान हाजरीन के लिए बाँटा गया और 1500/- डा० जी और उनकी बेटी की ओर से दान में मिले।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts